रात्रि क्लास 6/1/69 ओम शान्ति शिवबाबा याद है?

बाप को पहचानते भी हैं; परन्तु माया ऐसी है जो भुला देती है। समझते भी हैं बाप पढ़ा रहे हैं। बेहद का वरसा मिलना है; परन्तु मुश्किलात यह है कि माया सभी को विघ्न जरूर डालेगी। तो डर जाये। सहज कर समझाते हैं बेहद का बाप विश्व का मालिक बनाते हैं। जहां–तहां से आतें हैं समझकर प्यार में भी आते हैं हम बेहद के बाप के पास जाते हैं। फिर भी माया झट उड़ा देती है। उसमें भी पहले नम्बर में विकार में गिरते हैं। आँखें धोखा देती हैं। आँखें कोई निकालने की बात नहीं। बाप ज्ञान का नेत्र देते हैं। ज्ञान और अज्ञान की लड़ाई चलती है। ज्ञान है बाप, अज्ञान है माया। इनकी लड़ाई बहुत तीखी है। गिरते हैं तो समझ में नहीं आता। फिर समझते हैं हम गिरा हुआ हूं, बहुत अकल्याण किया है। माया ने एक बार हराया तो फिर चढ़ना मुश्किल हो जाता है। बहुत बच्चे कहते हैं हम ध्यान में जावें; परन्तु उनमें भी माया है। मायावी पुरूष ध्यान में भी खराब काम करते हैं। पता भी नहीं पड़ता है। माया चोरी करावेगी, झूठ बुलावेगी। माया क्या नहीं कराती है। बात मत पूछो। गंदा माया बनाती है। गुल2 बनते2 फिर छी छी बन जाते हैं। माया ऐसी जबरदस्त है। बच्चे जो बाहर रहते हैं घड़ी2 माया गिरा देती है। गिरे हुये गंदे मनुष्यों को देखते ही हैं। आफिस आदि सभी में इकट्ठे रहते हैं। ब्रह्माकुमारियां भी ऐसी होती हैं। माया की ताकत होती है। तो खैंच लेती है। भल ब्राह्मणी पवित्र हो। तो भी एक दूसरे को गिरा सकते हैं। ऐसे गिरते बहुत हैं। गवर्मेन्ट चाहे हम देखें कितनी कुमारियां खराब हुई हैं तो लाखों निकल आये। छोटेपन में पतित हो पड़ते हैं। मायावी दुनियां है। ढेर के ढेर गंदे हो जाते हैं। समझो तुमसे पूछते हैं, बोलो माया बड़ी शत्रु है। कोई पर भी माया विजय पा लेती है। माया भी कम शक्तिवान नहीं है। सर्व को भ्रष्टाचारी किसने बनाया? माया ने। सतयुग में एक भी भ्रष्टाचारी नहीं। यहां तो है ही माया का राज्य। माया बड़ी कड़ी दुश्मन है। बाप दादा तो अच्छी रीत समझ सकते हैं। माया कितनी बलवान है। बूढ़ों की भी तृष्णा उठ खड़ी होती है। तमोप्रधान है ना। ब्रह्माकुमार–कुमारियों को भी हम चेक करावें तो आधा निकल सकती हैं। बच्चे कितने निश्चय में बैठे हैं हम नारायण बनेंगे। कम नहीं। आज यह कहते। कल फिर माया संगदोष में गिरा देती है। संग बहुत खराब है ना। यहां फिर भी कुछ सम्भाल है। बाप जानते हैं मेरा यह कर्तव्य है; परन्तु समझाते–2 भी तंग हो जाते हैं। न समझते हैं, उल्टा कर देते हैं तो फीलिंग आती है कितना समझाया है फिर भी तंग करते हैं। बहुत आते हैं बहुत गिरते हैं संगदोष में आकर। यहां तुम बाप के सामने बैठे हो। बाप कहते हैं मुझे याद करो। तो बाप का घर और बाप राजधानी भी याद आनी चाहिए; परन्तु माया याद करने नहीं देती है। माया बिल्ली पासा ही फेर देती है। गुलबकावली का खेल होता है। नाम ही रखा हुआ है गुलबकावली। माया बिल्ली दीवा बुझा देती है। यह कहानी बनाई हुई है। एक्युरेट नहीं बनाते हैं। ऐसी–2 बातें बनाते हैं मनुष्य विश्वास करते हैं। अभी तुम विश्वास नहीं करते हो। क्योंकि तुम श्रीमत पर चलते हो। हरेक अपने में हेर डाले कहां तक हम बाप को याद करते हैं। झाड़ू लगाते हैं, पोस्ट आफीस में जाते हैं। हम मीठे बाप की याद में जाते हैं। सिवाय उनके और कुछ तो याद न आना चाहिए। नोट करना चाहिए हम सीधा बाप की याद में गये? याद में रह भोजन बनाने से वह पवित्र भोजन होगा। उससे बहुतों का कल्याण होगा। खिलावे भी बाबा की याद में। रोज बोलो शिवबाबा याद है? अच्छा, याद कर खाओ। कायदा निकल जाये तो दोनों का भला हो सकता है; परन्तु अच्छी चाहिए। गपोड़ा मारने वाली नहीं। तो बहुतों का कल्याण कर सकते हैं। झूठ की सजा बहुत2 कड़ी है। बाप जो युक्ति बताते हैं तो अपना भी, बहुतों का भी कल्याण कर सकते हैं। कोई भी काम हो। पहरे वाले को भी जितना टाइम मिलता है अन्दर में शिवबाबा की याद में आते–जाते रहे। तो बहुत कल्याण हो सकता है। कम कार डे..... भक्ति भी करते हैं तो बुद्धि कहां2 चली जाती है। यहां तुमको फायदा बहुत है। वहां तो फायदा कुछ नहीं होता। कमाई के लिये (म)नुष्य कितना ..... मनुष्य है ना। ..... (य)ह तो बहुत ही सहज है। कोई टीचर है भल पढ़ाओ जो भी समय मिले उसमें याद करते .....। कैसे गिरते हैं यह ..... भी .... मिलेगी। अच्छा, रूहानी बच्चों को बाप दादा का याद प्यार गुडनाइट और नमस्ते।